राजकीय महाविद्यालय ननखड़ी
जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश – 172021

बी.ए. हिन्दी

स्नातक स्तरीय हिन्दी पाठ्यक्रम के ध्येय एवं उद्देश्य

बी.ए. हिन्दी (CBCS) पाठ्यक्रम के सामान्य ध्येय एवं उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा, साहित्य और व्यावहारिक हिन्दी की समग्र समझ प्रदान करना है। इस पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के मानक रूप को सही ढंग से जानने, लिखने और बोलने में दक्ष बनाना है, ताकि वे प्रभावी संप्रेषण की क्षमता विकसित कर सकें। साहित्य के क्षेत्र में उन्हें विभिन्न कालों के प्रमुख कवियों, कथाकारों और लेखकों के जीवन, कृतित्व एवं साहित्यिक योगदान से परिचित कराया जाता है। खड़ी बोली के साथ-साथ अवधी, मैथिली, ब्रजभाषा और सधुक्कड़ी जैसी विविध भारतीय बोलियों का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है, जिससे भाषा की बहुविध संरचना की समझ विकसित होती है। साहित्य की प्रमुख विधाएँ—कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज और अनुवाद के स्वरूप, विशेषताओं और महत्व से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाता है। गद्य और पद्य की महत्वपूर्ण रचनाओं के पठन-पाठन और विश्लेषण के माध्यम से उनमें आलोचनात्मक क्षमता और साहित्यिक संवेदना विकसित की जाती है। साथ ही, अनुवाद एवं कार्यालयी हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान, तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाती है। दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली प्रयोजनमूलक हिन्दी विद्यार्थियों में व्यवहारिक दक्षता और भाषा-प्रयोग की सहजता बढ़ाती है, जिससे वे भविष्य के शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक अवसरों के लिए तैयार हो सकें।

प्रत्येक पर्चे का ब्यौरा और उद्देश्य

कोड	पर्चे का नाम	ध्येय एवं उद्देश्य (विस्तृत विवरण)
HIND 101	प्रयोजनमूलक हिन्दी (Core Compulsory)	इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को पत्र-लेखन, प्रारूपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन आदि के व्यावहारिक पक्षों का प्रशिक्षण दिया जाता है। मुहावरे, लोकोक्तियाँ, शब्द-प्रयोग, पारिभाषिक शब्दावली, कार्यालयी हिन्दी, अनुवाद तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की व्यावहारिक जानकारी दी जाती है ताकि विद्यार्थी प्रशासनिक व व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्य करने में सक्षम बन सकें।

HIND 102	हिन्दी साहित्य का इतिहास (DSC-1A)	विद्यार्थियों को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल की प्रमुख काव्यधाराओं, कवियों एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों से परिचित कराया जाता है। प्रत्येक काल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश का विश्लेषण करना सिखाया जाता है तथा विभिन्न कवियों से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी दी जाती है।
HIND 103	मध्यकालीन हिन्दी कविता (DSC-1B)	विद्यार्थी कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, रसखान, बिहारी, भूषण और घनानंद जैसे प्रमुख कवियों के जीवन-परिचय, कृतित्व और काव्यगत विशेषताओं को समझते हैं। चयनित काव्य-रचनाओं की व्याख्या कर केंद्रीय भाव स्पष्ट करने की क्षमता का विकास किया जाता है।
HIND 104	हिन्दी भाषा और सम्प्रेषण (AECC)	इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा की शुद्धता, व्याकरणिक नियमावली, शब्द-ज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली को सुदृढ़ करना है। लेखन एवं कार्यालयी दृष्टि से विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता बढ़ाई जाती है ताकि वे प्रभावी सम्प्रेषण कर सकें।
HIND 201	अनिवार्य हिन्दी (रचना पुंज) (Core Compulsory)	विद्यार्थी कबीर, घनानंद, निराला, अज्ञेय, मुक्तिबोध, धूमिल आदि कवियों की काव्य-रचनाओं तथा प्रेमचंद, मोहन राकेश, उदय प्रकाश, दिनकर, श्रीलाल शुक्ल आदि लेखकों की चयनित गद्य रचनाओं का पाठ-विश्लेषण करते हैं और केंद्रीय भाव को समझते हैं।
HIND 202	आधुनिक हिन्दी कविता (DSC-1A)	भारतेंदु, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, नागार्जुन, नरेश मेहता जैसे कवियों का परिचय, उनकी काव्य-प्रवृत्तियाँ एवं चयनित रचनाओं की व्याख्या द्वारा आधुनिक कविता की समझ विकसित की जाती है।
HIND 203	हिन्दी गद्य साहित्य (DSC-1B)	'त्यागपत्र', 'नमक का दारोगा', 'आकाशदीप', 'परदा', 'वापसी' सहित प्रमुख गद्य रचनाओं तथा हिन्दी निबंधों का तर्कपूर्ण विश्लेषण कराया जाता है। विद्यार्थियों को रचनाओं के सार, लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सम्यक जानकारी दी जाती है।
HIND 204	कार्यालयी हिन्दी (SEC-1)	इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत सरकारी, अर्द्ध-सरकारी एवं निजी कार्यालयों में कार्य-प्रणाली का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है। नोटिंग, ड्राफ्टिंग, रिपोर्ट-लेखन, पत्राचार एवं कार्यालयी प्रक्रियाओं का वास्तविक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे विद्यार्थियों का कौशल विकास होता है।
HIND 206	अनुवाद विज्ञान (SEC-2)	विद्यार्थियों को भाषिक अनुवाद के सिद्धांत, प्रक्रिया और व्यावहारिक उपयोग का ज्ञान कराया जाता है। कार्यालयी एवं प्रशासनिक अनुवाद का गहन विश्लेषण किया जाता है ताकि वे अनुवादक के रूप में कार्य करने में सक्षम हो सकें।

HIND 305	लोक साहित्य (DSC-1A)	लोक जीवन, लोक संस्कृति, लोक परंपराओं और लोक मूल्य-बोध की समझ विकसित की जाती है। स्थानीयता, स्वावलंबन एवं सामाजिक संस्कारों की भावना को सुदृढ़ किया जाता है जिससे सांस्कृतिक चेतना का विकास हो।
HIND 306	छायावादोत्तर हिन्दी कविता (DSE-1B)	अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह आदि कवियों के व्यक्तित्व, कृतित्व, काव्यगत विशेषताओं और चयनित कविताओं की सप्रसंग व्याख्या कराई जाती है।
HIND 301	रंग आलेख एवं रंगमंच (SEC-3)	रूपक, उपरूपक, एकांकी, लोकनाट्य, प्रहसन, काव्यनाटक, नुक्कड़ नाटक, प्रतीक नाटक, रेडियो नाटक आदि का सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है। हिन्दी के प्रमुख नाटककारों, रंगशैलियों, रंग समीक्षा एवं रंग प्रशिक्षण का अध्ययन कराया जाता है।
HIND 304	समाचार संकलन एवं लेखन (SEC-4)	विद्यार्थियों को समाचार की परिभाषा, तत्व, स्रोत, खोजी एवं व्याख्यात्मक रिपोर्टिंग, विभिन्न क्षेत्रों (राजनीति, विज्ञान, कानून, खेल, पर्यावरण, संस्कृति आदि) की रिपोर्टिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है। मीडिया, समाचार माध्यमों एवं शीर्षक लेखन की व्यावहारिक दक्षता विकसित की जाती है।

उपरोक्त सभी पाठ्यक्रमों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बी.ए. हिन्दी (CBCS) का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण बौद्धिक, भाषिक और व्यावहारिक विकास को लक्ष्य करता है। प्रयोजनमूलक, कार्यालयी और अनुवाद विषयों के माध्यम से जहाँ विद्यार्थियों में व्यावसायिक दक्षता विकसित की जाती है, वहीं साहित्य के इतिहास, मध्यकालीन एवं आधुनिक कविता, गद्य साहित्य, लोक साहित्य तथा छायावादोत्तर कविता जैसे विषयों से उन्हें हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा, विविध प्रवृत्तियों और सांस्कृतिक मूल्यों की गहन समझ प्राप्त होती है। रंगमंच तथा समाचार संकलन एवं लेखन जैसे कौशलमूलक विषय विद्यार्थियों को रचनात्मक लेखन, मीडिया एवं संप्रेषण के क्षेत्र में सक्षम बनाते हैं। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को व्यवहारिक जीवन, रोजगार और उच्च शिक्षा के लिए भी पूरी तरह तैयार करता है। इसका उद्देश्य ऐसे शिक्षित, संवेदनशील, सृजनशील और आत्मनिर्भर नागरिक तैयार करना है जो समाज, संस्कृति और राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान दे सकें।